(पुस्तक समीक्षा)

# अनकही दास्तान: मामांग दाई की कृति 'काली पहाड़ी'

नानाङ यीराङ

'काली पहाड़ी' साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत पद्मश्री मामांग दाई द्वारा लिखित 'द ब्लैक हिल' का हिंदी अनुवाद है। इसका अनुवाद कंचन वर्मा ने किया है। इस उपन्यास के केंद्र में है प्रेम और प्रेम का विभिन्न रूप। उपन्यास में प्रेम के साथ-साथ धोखा तथा साजिश है, धर्म और दर्शन है, डर-अनिश्चितता व शक है, एक मिशन है, सच्ची दोस्ती है, प्रकृति है, कल्पना है और इतिहास भी है। इस विशाल दुनिया की हजारों-लाखों कहानियों में एक अनकही कहानी है जिसके मध्य में प्रेम, यात्रा और भावनाएं है। गिमुर और कजिंशा का रोमानी इश्क तथा फादर क्रीक का भक्ति प्रेम सुदूर पूर्वी हिमालय के गहन-घने जंगलों के बीच परस्पर ऐसे टकराते है कि केवल इन तीनों की ज़िंदगियाँ ही नहीं अपितु, इन पहाड़ों में रहने वाले सभी आदिवासी समाज और स्वयं ये पहाड़ आपस में गुत्थमगुथ जाते हैं। उपन्यासकार ने पाठकों के लिए रहस्यात्मक ढंग से कई चीजें छोड़ दी है, यहाँ तक कि वह चाहती है कि सब अपने स्वादानुसार ही अपना खाद्य अपनी थाली में रखें।

उपन्यास में प्रेम के विभिन्न रूप हैं। यहाँ गिमुर और कजिंशा का रोमानी इश्क है और लेंडेम का गिमुर के प्रति निशर्त प्रेम भी है जो सिर्फ देना जानती है, यह प्रेम-त्रिकोणीय है। यहाँ माँ का असीम ममतामई प्रेम है, ज़मीन व मातृभूमि से न बिछड़ पाने वाला प्रेम। भगवान के प्रति अगाध श्रद्धामय प्रेम है और सच्ची दोस्ती का हार्दिक स्नेह भी है। उपन्यास के केंद्र में गिमुर और कजिंशा का रोमानी प्रेम है जो दुर्गम रास्तों, जंगलों, नदियों इत्यादि प्राकृतिक कठिनाइयों से लेकर विदेशी आगंतुक अंग्रेज़ तथा इसाई धर्म-प्रचारकों से होकर गुज़रता है। यह उनके जीवन की विडंबना है कि प्रेम बांटने के नाम पर आने वाला फादर क्रीक इन दो प्रेमियों के दु:खद बिछुड़न का कारण बन जाता है। मेबो की गिमुर और दाऊ घाटी का कजिंशा का प्रेम अरुणाचल (उस वक्त कोई निश्चित नाम व सीमा नहीं थी) की दुर्गम पहाड़ी रास्तों, छोटे-बड़े नदियों तथा अभेद्य जंगलों से होकर मिलता है। इनकी भाषा अलग-अलग है ये एक-दूसरे की भाषा आपस में समझ नहीं सकते किंतु, ये प्रेम की भाषा समझते हैं। जब शक धीरे-धीरे दूर होता है और गिमुर तथा कजिंशा संपूर्ण रूप से एक-दूसरे के ऊपर भरोसा करके समर्पण करते हैं, तब पनपता है प्यार, ऐसा प्यार जो दोनों को अलग करके भी अलग नहीं कर पाता दो जिस्म एक जान। खेत की छोटी से झोपड़ी में उस बरसाती रात में अनमनी तरीके से दाऊ घाटी के उस अनजान व्यक्ति को प्रवेश करने से लेकर हर रात एक शब्द भी न कहकर परस्पर संगत को मौन रूप से अनुभव करना उनके प्रेम का स्वाभाविक चरण था। उनके प्रेम की परिणति पहाड़ की पृष्ठभूमि वाले उस छोटी-सी झोपड़ी में अँधेरी रात में हुई जहाँ दोनों एक-दूसरे के धड़कनों को सुन सकते थे और दोनों के दरमियाँ सब-कुछ हट गया था। उनका प्रेम शुद्ध था दोनों एक-दूसरे के शरीर के पोर-पोर से होते हुए अंतर्मन तक पहुँच गए थे। गिमुर कजिंशा के प्रेम में अपनी माँ, गाँव, दोस्त सब कुछ छोड़-छाड़कर अत्यंत दुर्गम पहाड़ी रास्तों व नदियों से होते हुए एक ऐसे जगह चलने को तैयार हो गई जिसके अस्तित्व का ज्ञान भी उसको आज से पहले नहीं था। कजिंशा और गिमुर का प्रेम निश्छल था, इसलिए उगेन मारपा का इस बलशाली वीर योद्धा के साथ किसी तरह रिश्ता बनाए रखने की चाल

असफल रही। छोमु की देह की गर्माहट पाकर भी कजिंशा गिमुर के पास लौटना चाहता है। जुड़वा बच्चे में से एक स्वस्थ बच्चा मर जाने के बाद दोनों के वैवाहिक जीवन में दरारें पैदा होने लगती हैं और गिमुर इस चीज से परेशान होकर अपने गाँव लौट जाती है। एक दिन अचानक मेबो में कजिंशा और उसकी पहली पत्नी औली का बेटा अवेसा खेत में गिमुर के आगे प्रकट होकर कहता है कि पिता जी ने उसे लेने भेजा है तब वह कजिंशा से नाराज़ होकर भी उससे मिलना चाहती है, उसके संग प्यार भरी बातें करना चाहती है किंतु, अपनी आंतरिक इच्छा ज़ाहिर न करते हुए, वह अवेसा को सीधा-सीधा मना करने के बजाय बाद में आने का आश्वासन देकर उसे विदा करती है। औरत और उसके प्रेम को आज तक कौन समझ सका है। जब औरत प्रेम में पड़ती है तो अपने प्रिय के समक्ष कोमल कलि बन जाती है और जब उसी प्रिय पर किसी तरह की आंच का भी आभास उसे होता है तो वह दहाड़ती सिंघनी बन जाती है। अपने प्रिय के खातिर वह क्या पहाड़, क्या नदी वह तो जलती आग पर भी चल दे। उपन्यास के अंत में गिमुर चाऊसा, लेंडेम और अन्य साथियों की मदद से डिब्रूगढ़ जेल में कैद कजिंशा से मिलने निकल जाती है वह अत्यंत ही मार्मिक क्षण था। बंदूकदारी मिगलुनों से कजिंशा को छुड़ा पाना असंभव ही था किंतु वह अंतिम बार अपने प्रिय को जी भर के देख लेना चाहती थी। इस रोमानी प्रेम के अलावा यहाँ एक ऐसा शुद्ध, पवित्र व निश्चल प्रेम भी है जो सिर्फ देना जानता है, लेंडेम का गिमुर के प्रति प्रेम। लेंडेम गिमुर से दस वर्ष बड़ा था। किंतु मात्र उसका सान्निध्य पाने के लिए वह गिमुर के रंग में रँग जाता था। उसे गिमुर और कजिंशा के चक्कर के बारे में पता था, वह चाहता है कि गिमुर उस व्यक्ति से न मिले और उससे संबंध गहरा न करे इसके बावजूद भी लेंडेम उसे नहीं रोकता और न ही कजिंशा से अपनी दोस्ती खट्टा करता है क्योंकि उसे पता है गिमुर की ख़ुशी कजिंशा के साथ है। गिमुर की माँ की मृत्यु का अंतिम संस्कार भी लेंडेम अपने ऊपर लेता है। वह गिमुर को अंतर्मन से चाहता है। वह गिमुर को प्राप्त करना नहीं चाहता, वह तो गिमुर की आत्मा से प्रेम करता है और हर हालत में उसकी भलाई चाहता है। गिमुर की गैर-जिम्मेदाराना और लापरवाह व्यवहार पर उसे गुस्सा तो आता है किंतु, जब वह गिमुर की व्यथा सुनता है तो उसका हृदय दया से भर जाता है। अवेसा के गिमुर को लेने आने की बात सुनकर वह अंदर से दुखी होकर भी उसे कजिंशा के पास लौटकर एक नई शुरुआत करने को कहता है। उसका शुद्ध प्रेम बड़े भाई की भांति गिमुर की ख़ुशी और भलाई मात्र ही सोचता है। वह स्वयं गिमुर को कजिंशा के हाथ में सौंपकर आता है और अंत तक गिमुर का साथ नहीं छोड़ता। प्रेम-त्रिकोणीय होने के साथ-साथ उपन्यास में प्रेम के विविध रूपों को सुंदर तरीके से रेखांकित किया गया है। "सारा जीवन केवल इसी प्रेम भावना के बारे में था जो अब उसके दिल में उमड़-घुमड़ रहा था। जब यह टूटकर टुकड़ों में बिखर जाएगा तब उसके साथ जो बचा रह जाएगा वह होगा प्रेम, सिर्फ प्रेम।"

'काली पहाड़ी' में सच्ची मित्रता को उत्सवित किया गया है। गिमुर और लेंडेम की दोस्ती जो अगाध है किसी प्रकार का कोई लाभ-हानि, छल-छलावा नहीं है। कजिंशा और लेंडेम की दोस्ती में आपसी समझ, ज़िम्मेदारी व परिपक्वता है। चाउसा अंग्रेजों के बीच रहकर भी अपने आदिवासी दोस्तों के प्रति गहरा प्रेम रखता है। वह हरदम अपने दोस्तों के लिए तैयार है। चाऊसा का रिस्तेदार योंग अंग्रेजों का सिपाही है, अपनी नौकरी और जीवन के दाव पर वह लेंडेम और गिमुर को कजिंशा तक पहुंचाता है। लासोंग भरे अँधेरे में उन्हें नदी के मार्ग से होता हुआ जेल तक ले जाता है। उपन्यास में विदेशी फ़ादर क्रीक का कजिंशा तथा लेंडेम की दोस्ती का भी सुंदर वर्णन है।

उपन्यास की पृष्ठभूमि अरुणाचल प्रदेश है, किंतु उस वक्त यह नाम नहीं पड़ा था, न यह क्षेत्र अंग्रेजों के चंगुल में आया था और न ही भारत-तिब्बत की सीमा स्पष्ट रूप से सुनिश्चित थी। 'काली पहाड़ी' में यहाँ के आदिवासी समाज का वर्णन है। अरुणाचल का आदिवासी समाज पितृसत्तात्मक समाज है। पैतृक समाज में एक औरत की क्या विडंबना होती है लेखिका ने विस्तार से कहने की कोशिश की है। "खून के रिश्तों की कहानियों में अक्सर औरतें गुमनाम तथा भूला दी जाती है।" इस समाज में औरत की पत्नी तथा बहु धर्म तभी पूरा होता है जब वह खानदान को पुत्र जन कर देती हैं। जिन वैवाहिक जोड़ी के बच्चे, खासकर पुत्र नहीं होते उनकी समाज में कोई इज्ज़त नहीं होती है। "कोई बच्चा नहीं, कोई सामाजिक स्वीकृति नहीं! इस नियति की नब्ज़ थी जन्म-मरण की अनवरत हलचल, जो एक ही चीज़ पर टिकी थी- पुत्र जन्म।" यहाँ जनजातीय समाज में विद्यमान रीति, परंपरा, संस्कृति, रूढ़ियों, निषेध आदि का भी वर्णन किया गया है। उपन्यास में आदिवासी समाज के सहज-सरल जीवन तथा उस सहज-सरल जीवन शैली से प्रदर्शित दर्शन और धर्म का भी वर्णन है। इन आदिवासियों के पास अपनी कोई लिपि नहीं है। बाहर से आए आगंतुकों की नज़र में इनके पास कोई धर्म भी नहीं है किंतु, इनकी समग्र जीवन शैली ही अपने आपमें इनका धर्म, लिपि, पहचान और दर्शन है। पूर्वज इनके शुभचिंतक हैं और साक्षात प्रकृति इनका भगवान और रक्षक- "ऐसा क्या है जो मैंने नहीं जाना? मैं इस भूमि को जानता हूँ, मैं हमेशा से यहाँ रहा हूँ। अपने पूर्वजों के माध्यम से इन सबका हिस्सा हूँ मैं! मैं जानता हूँ और अगर उनके बारे में कुछ नहीं बोलता तो ऐसा सिर्फ इसलिए है क्योंकि मुझे पता है कि शब्द चुराए जा सकते हैं। और फिर मुझे फिर कुछ कहने की क्या ज़रूरत? ...उसके पूर्वज चुप थे। वे आराम कर रहे थे लेकिन वह जानता था कि वे उसकी हर हरकत पर नज़र रख रहे हैं।" फ़ादर क्रीक के यह पूछने पर कि आप किस पर विश्वास करते हैं? कजिंशा बहुत सहज रूप से जवाब देता है, "मैं जीवन में विश्वास करता हूँ।" वह आदिवासी दर्शन को अत्यंत कम शब्दों में बहुत गंभीर रूप से बयाँ करती है। इनका कोई एक प्रमुख भगवान नहीं है, किंतु नदी, पहाड़, जंगल, खेत, जानवर इत्यादि प्रकृति के हर अंश में एक अच्छी तथा बुरी आत्मा विद्यमान है और ये लोग अच्छी आत्माओं की पूजा करते हैं। कांब्रिंग, मीरी इत्यादि अलग-अलग नामों से जाना जाने वाले ये धर्मगुरु आत्माओं और मनुष्य के बीच मध्यस्थ हैं। इन जनजातीय लोगों के पास बाइबिल, कुरान या गीता जैसे कोई पवित्र ग्रंथ नहीं हैं, ये लोग साक्षात धरती माँ यानी ज़मीन को पढ़ते हैं। अन्य धार्मिकों की तरह ये रोज़ पूजा-प्रार्थना नहीं करते किंतु इनकी जीवन पद्धति ही अपने आप में इनकी पूजा-प्रार्थना है क्योंकि इनका जीवन ही देवताओं द्वारा संचालित है। "हम ज़मीन पढ़ते हैं। ज़मीन हमारी किताब है। इस पहाड़ी पर, यहाँ की घास और चट्टानें और पत्थर, सब बातें करते हैं। और आकाश से गिरने वाली- बारिश, गड़गड़ाहट और बिजली भी! आत्माओं की आवाजें हमें बातें बताती रहती हैं। इस तरह हमने सीखा है कि क्या अच्छा है या क्या मीठा या कड़वा! यहाँ रहकर, दिन और रात के दौरान क्या होता है... हर दिन सैकड़ों वर्षों तक, यह सब हमने सीखा है।" आदिवासी सहज जीवन जीते हैं। इनका जीवन भौतिक चीज़ों से बंधा हुआ नहीं है, बहुत कम में ही ये जीते और संतुष्ट रहते हैं। यह अपने जीवन यापन के लिए पूरी तरह प्रकृति पर निर्भर रहते हैं। इनको यहाँ से वहां जाने के लिए अधिक सामान की आवश्यकता नहीं पड़ती, बस अपनी सुरक्षा के लिए एक चाकू या दाव अपने पास रख लेते हैं, बाकी सब धरती माँ पर छोड़ देते हैं।

'सोसाइटी द मिशंस इटर्नेजर्स', एक ऐसा मिशन जो सात समुंदर पार परियोजित किया जा रहा था। इस मिशन का मुख्य उद्देश्य है, विधर्मियों को ईसाई धर्म में परिवर्तित करना और पृथ्वी के कोने-कोने में प्रभु येशु का

प्रेम-संदेश का प्रचार-प्रसार करना। फ्रांस के लोरेन प्रांत में जन्मे निकोलस माइकल इस मिशन के अंतर्गत सुदूर हिमालय पूर्वी के पहाड़ी क्षेत्र में जाता है। सामानांतर रूप से अलग-अलग महाद्वीपों में चल रहे निकोलस उर्फ़ फादर क्रीक और गिमुर व कजिंशा नियति से अनजान इत्तेफ़ाक से टकराते हैं, और सदा के लिए उन सबकी जिंदगी बदल जाती है। इस मिशन में एक जूनून था, एक तीव्र आकर्षण कि उसके सामने दुर्गम पहाड़ी रास्ते, दलदली रास्ते, जंगली कीड़े-मकोड़े, बीमारी इत्यादि क्षीण हो जाती है, यहाँ तक कि जिंदगी का भी कोई ठिकाना नहीं। एक ऐसा मिशन जहाँ अपने घर-बार, परिवार तथा मातृभूमि का मोह को त्यागकर महीनों की यात्रा करके इतनी दूर एक अनिश्चित अनजान भूमि में चले आएं। "यह उसकी मृत्यु थी जिसने उन्हें शाप दिया था! उसे क्यों मरना पड़ा? वह यहाँ किसलिए आया था? उससे इतनी दूर? वह उनकी भूमि, उनके जीवन और उनके विचारों के बारे में क्या जानता था? आख़िरकार उसने क्या हासिल किया? वह उसे स्निग्ध भाव से देखकर मर गया जिसने उसकी आत्मा को अंदर तक चाक कर दिया था।"

उपन्यास की सबसे बड़ी विशेषता इतिहास और कल्पना का सम्मिश्रण है। उपन्यासकार ने ऐतिहासिक और काल्पनिक तत्त्वों को इतने सुंदर तथा सूक्ष्म ढंग से प्रस्तुत किया है कि पता ही नहीं लगता क्या कल्पना है और क्या इतिहास। लेखिका की वर्णन शैली इतनी प्रभावशाली है कि एक बिंदु में आकर यह बता पाना भी मुश्किल हो जाता है कि उपन्यास में प्रेम-त्रिकोणीय तथा मिशन जेसुइट में कौन काल्पनिक है अथवा कौन ऐतिहासिक है। फ्लैशबैक और फ़्लैश-फॉरवर्ड की तकनीक से उपन्यास जी उठने के साथ-साथ रहस्यात्मक हो गया है और इतिहास व कल्पना को एकमेक कर देता है। "श्रीमती कटर, वही महिला थी, जिन्होंने काफी बरस पहले अबोर पहाड़ी की एक आदिवासी लड़की को एक किताब दी थी। यह एक वर्तनी की पुस्तक थी जो अब किसी गिमुर नामक लड़की के पास थी। लेकिन क्रीक को कभी भी इस बात का पता नहीं चल पाएगा। उनके-क्रीक तथा गिमुर के जीवन के रास्ते एक दूसरे से मिलेंगे ज़रूर लेकिन न तो उनकी आपस में कोई बातचीत होगी, न कोई गोपनीय बात साझा की जाएगी और न ही किसी जिंदगी के बारे में बताया-समझाया जाएगा।" पाठक पढ़ते हुए महसूस करेंगे कि दाऊ घाटी की ओर बढ़ती गिमुर तथा मेबो की ओर बढ़ते फ़ादर क्रीक का उस पहले टकराव के बाद इतिहास और कल्पना की रेखा मद्धम होते-होते कब ओझल हो जाती है आभास नहीं होता। इतिहास और कल्पना की यह जुगलबंदी वाकई में इस उपन्यास की जान है।

'काली पहाड़ी' में पाठक के लिए बहुत कुछ है। यहाँ 19वीं शताब्दी के सुदूर पूर्वी हिमालय पहाड़ियों में बसे आदिवासियों के अस्थायी जीवन पद्धति का सुंदर वर्णन है, आदिवासी समाज में विद्यमान रूढ़ि तथा निषेधों को सहज तरीके से पेश किया गया है, परस्पर संप्रेषणीयता कम हो जाने से कैसे मिठास भरे रिश्तों में भी कड़वाहट पैदा हो जाती है कजिंशा और गिमुर की वैवाहिक जीवन के माध्यम से देखा जा सकता है। उपन्यास की स्त्री पात्र गिमुर, नागो, मोई, येन्जी तथा औली सबका व्यक्तित्व और जीवन व्यथा एक-दूसरे से भिन्न है और सब अपने ढंग से अपनी लड़ाई लड़ रही है। उपन्यासकार ने संबंध व रिश्तों के विभिन्न रूपों को कलमबद्ध किया है। पति-पत्नी का रिश्ता, सौतेली माँ और बेटे का रिश्ता, अंतर कबीलाई रिश्ते, पड़ोसी देश के साथ रिश्ते, विदेश से आए अनजान व्यक्तियों के साथ रिश्ते, प्रकृति के साथ मनुष्य का रिश्ता, राजनैतिक रिश्ते, रणनीतिक रिश्ते आदि। उपन्यास की एक बड़ी शैलीगत विशेषता यह है कि, उपन्यासकार कहीं भी आवश्यकता से ज्यादा विस्तारपूर्वक वर्णन नहीं करती वह यह भार पाठकगणों पर छोड़ देती हैं कि वे अपने ढंग से ग्रहण करें और इसी

कारण उपन्यास एक हद तक रहस्यात्मक बन पड़ा है। प्राक्कथन में लेखिका लिखती है- "पाठक यह स्वयं निर्णय करें कि यह कहानी सच है या नहीं। हालाँकि मेरा मानना है कि हर घटित वाकये के आख़िर में, जो बात वाकई मायने रखती है वह है शुद्ध प्रेम; और स्मृतियाँ जो जीवन देती हैं, और जीवन...सतत है।"

कंचन वर्मा द्वारा 'काली पहाड़ी' अनुवाद सराहनीय है। श्रोत भाषा से लक्ष्य भाषा में अंतरित करते हुए अनुवादकार ने बोधगम्यता पर पूरा-पूरा जोर दिया तथा सहज-सरल भाषा का प्रयोग करते हुए भी साहित्यिकता कहीं भी भंग नहीं हुई है। यह अनुवादकार का कौशल और कुशल दोनों का प्रमाण है। कमान लाई कजिंशा और तिब्बती उगेन मारपा का परस्पर 'किसिरो, खाम्सी चाऊसा का अबोर (आदी) लेंडेम को 'कैप्मी' के नाम से संबोधनों को ज्यों का त्यों रहने देना स्थानीयता की रस को दृढ़ करता है जो अनुवादिका की कुशलता का परिचय देता है। उपन्यास में मिगलुन, कांब्रिंग, मीरी, इप्पो, काकुंग, तगात इत्यादि शब्दों को यथास्थान रखकर स्थानीयता की रस-धारा बहने देना अनुवादित रचना की सफलता है। अनुवादिका उस पहाड़ी आदिवासी समाज से बावस्ता नहीं रखती है इस कारण मबो, खंपटी, रशेंग, मॉशअप, असी इत्यादि जैसे कुछेक शब्दों की उच्चारणगत वर्तनी नहीं लिख पाई है, जो स्वाभाविक तथा सूक्ष्म दोष है। अनुवादित रचना में मुख्य होती है भाषा की स्वाभाविकता तथा रस का निरंतर प्रवाह जो कंचन वर्मा द्वारा अनुवादित 'काली पहाड़ी' में बेशक विद्यमान है। प्रेम, दोस्ती, रिश्ते, धर्म, दर्शन, विश्वास आदि मानवीय मूल्यों को खोजती कल्पना और इतिहास के सम्मिश्रण से लिखा गया यह उपन्यास अत्यंत पठनीय है। समुद्री यात्रा, पहाड़ी यात्रा, जंगली यात्रा तथा नदी यात्रा के अलावा यहाँ एक यात्रा और है जो अंदर की ओर जाता है, अर्थात अंतर्दर्शन व आत्मनिरीक्षण। कथानक के दौरान कभी पात्रों के माध्यम से कभी स्वयं आगे आकर लेखिका का जो गहन विचार उपन्यास में उभरा है वह सच में पाठक को अंतर्दर्शन की ओर ले जाता है और गहन विचार करने पर मजबूर कर देता है- "हम डरते हैं, क्योंकि हम यात्राएं नहीं करते।"

*(**लेखकीय परिचय :** नानाङ यीराङ राजीव गाँधी विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में शोधार्थी हैं।*

*मोबा: 7005045118, ई-मेल : nanangyirang80@gmail.com)*